ISSUE: 05
VOLUME: 05

The Knowledge Spectrum: An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

ISSN:3107-3557 (Online)

भारतीय संस्कृति में गौ माता : सामाजिक चेतना और मूल्यबोध

Shivam K. Dave
Department of Sanskrit
Saurashtra University, Rajkot

(1) भारतीय संस्कृति में गौ माता की अवधारणा :

भारतीय संस्कृति में गौ माता को केवल एक उपयोगी पशु के रूप में नहीं, बल्कि सांस्कृतिक प्रतीक के रूप में स्वीकार किया गया है। आज का मानव संसार में भौतिक विज्ञान और रसायण विज्ञान की और प्रगतिशील है। इस विज्ञान द्वयी के चक्कर में फँसे हुए मानव के सन्मुख यदि धर्म की चर्चा की जाए तो यह कहकर टाल दिया जाता है कि मनुष्य की सब आवश्यकताओं को विज्ञान पूरी कर रहा है: फिर यह धर्म की दुहाई क्यों ? यदि विज्ञान भक्ति का चश्मा उतारकर शुद्ध दृष्टि से देखा जाए तो मालूम होगा विज्ञान और धर्म का चोली-दामन का सम्बन्ध है, ये दोनों परस्पर सापेक्ष हैं। हिन्दू संस्कृति में जहाँ धर्म को प्रधानता दी गई है, वहाँ विज्ञान की भी उपेक्षा नहीं की गई। हिन्दू-संस्कृति में गौ-सेवा को प्रधान धर्म माना गया है। वैदिक काल से लेकर आजतक गौ गरिमा के गीत गाए गए हैं। परम पूजनीया गौ जिससे जीवमात्र उपकृत हैं।

गाय भारतीय संस्कृति में पवित्रता, शुभता और सम्मान का प्रतीक मानी जाती है। इसे "गौ माता" के रूप में आदर दिया जाता है, जो हिंदू धर्म, परंपराओं और सांस्कृतिक मान्यताओं का अभिन्न हिस्सा है। पौराणिक कथाओं में गाय को देवी और माता का दर्जा प्राप्त है और इसे कामधेनु व भगवान कृष्ण से जोड़ा गया है, जो गोपाल के रूप में गायों की रक्षा का आदर्श प्रस्तुत करते हैं। गौशालाओं में गायों की सेवा को पुण्य कार्य माना जाता है और गौ दान धार्मिक व आध्यात्मिक लाभ का साधन है। गोपूजा की प्रथा के माध्यम से गाय को पुष्प, धूप, दीप और आरती द्वारा सम्मानित किया जाता है, जो समृद्धि और सौभाग्य का प्रतीक मानी जाती है। भारतीय संस्कृति में गाय केवल एक पशु नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और आध्यात्मिक जुड़ाव का आधार है, जो समाज को आध्यात्मिकता और परंपराओं से जोड़ती है। वैदिक साहित्य में गौ को अघन्या कहा गया है, अर्थात् जिसकी हिंसा वर्जित है। यह अवधारणा समाज में करुणा और संवेदनशीलता के विकास का आधार बनी।[1] गौ का मातृत्व भाव भारतीय जीवनदृष्टि को प्रतिबिम्बित करता है, जहाँ पोषण देने वाली प्रत्येक शक्ति को 'माता' की संज्ञा दी जाती है। कृषि, दुग्ध उत्पादन और पारिवारिक जीवन में गौ की भूमिका ने उसे समाज का अभिन्न अंग बना दिया। यही कारण है कि गौ माता भारतीय सांस्कृतिक चेतना में श्रद्धा, संरक्षण और कृतज्ञता का विषय बनी।[2]

(2) गौ माता और भारतीय सामाजिक चेतना :

सामाजिक चेतना किसी भी समाज की सामूहिक नैतिक सोच को दर्शाती है। भारतीय समाज में गौ माता के प्रति सम्मान ने सामाजिक चेतना को अहिंसा, दया और सहअस्तित्व की ओर उन्मुख किया। ग्रामीण भारत में गौ परिवार की सदस्य के रूप में पूजी जाती रही है। इससे मनुष्य और पशु के बीच भावनात्मक सम्बन्ध स्थापित हुआ। गौ सेवा को धर्म और कर्तव्य माना गया, जिससे समाज में सेवा-भाव और परोपकार की भावना विकसित हुई। मनुस्मृति में गौ की रक्षा को सामाजिक कर्तव्य के रूप में वर्णित किया गया है, जो भारतीय नैतिक व्यवस्था का आधार बनता है।[3] गौ माता की रक्षा का विचार सामाजिक अनुशासन और नैतिक नियंत्रण का भी माध्यम बना, जिसने समाज को हिंसा से दूर रखा।

पूजा में गाय, गोमूत्र और गोबर का महत्त्व पवित्रता का कारण :

- गाय के गोबर और गोमूत्र से पूजा स्थल पवित्र होता है।
- गोबर से बने कंडे पूजा में उपयोग करने से देवी-देवताओं का वास माना जाता है।
- वास्तुशास्त्र के अनुसार, गोबर का धुँआ नकारात्मक ऊर्जा को समाप्त करता है।

धार्मिक मान्यताएँ :

- ऋग्वेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद में गाय को पूजनीय बताया गया है ।
- गोबर और गोमूत्र को पंचगव्य का भाग माना गया है, जिसके बिना पूजा अधूरी मानी जाती है ।
- भगवान शिव के प्रिय 'बिल्व पत्र' की उत्पत्ति भी गाय के गोबर से मानी गयी है ।

विशेष धार्मिक अनुष्ठान और उपयोग :

- लक्ष्मी पूजा पर गोबर के गणेश बनाकर पान के पत्ते पर रखकर पूजा करना शुभ माना जाता है।
- पूजा में गोबर के कंडे जलाने से पूर्ण फल की प्राप्ति की जाती है और घर पर शांति रहती है।

गाय और उसका धार्मिक महत्त्व :

- गाय परम पवित्र मानी गई है ।
- हिन्दू धर्म के अनुसार, गाय में 33 कोटि (प्रकार) के देवी-देवता निवास करते हैं।
- भगवान श्रीकृष्ण ने गौशालाओं और गाय पूजा की परंपरा को बढ़ावा दिया।
- भगवान राम के पूर्वज महाराजा दिलीप भी नंदिनी गाय की पूजा करते थे।

गाय का आध्यात्मिक पक्ष :

- गाय को आत्मा की विकास यात्रा के अंतिम पड़ाव पर माना गया है।
- गोदान को पितरों की तृप्ति और वैतरणी नदी को पार करना के साधन बताया गया है।

पौराणिक उल्लेख :

- गुरु वशिष्ठ ने गाय की नई प्रजातियों को जन्म दिया।
- श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान कृष्ण ने कहा, "धेनुनामस्मि कामधेनु।"

गोबर का धार्मिक और वैज्ञानिक महत्व धार्मिक लाभ :

- गोबर के कंडे में कपूर या घी डालकर जलाने से घर पवित्र होता है।
- गोबर का धुँआ सकारात्मक ऊर्जा बढ़ाता है और नकारात्मक शक्तियाँ को समाप्त करता है।

वैज्ञानिक पक्ष :

- गोबर में हानिकारक धुएँ की संभावना कम होती है और यह पर्यावरण के लिए लाभकारी है।

गाय के धार्मिक, पौराणिक और आध्यात्मिक महत्व के 30 प्रमुख बिंदु :

- गोपद्म व्रतः – सुख, सौभाग्य, संपत्ति, पुत्र और पौत्र प्राप्ति के लिए व्रत।
- गोवत्स द्वादशी व्रतः – समस्त मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए व्रत।
- गोवर्धन पूजा – सुख, समृद्धि और मोक्ष की प्राप्ति के लिए।
- गोत्रि-रात्र व्रतः – पुत्र प्राप्ति, सुख भोग और गोलोक की प्राप्ति के लिए।
- गोपाष्टमी व्रत – यह व्रत सुख और सौभाग्य में वृद्धि करता है।
- पयोव्रतः – संतान प्राप्ति की इच्छा रखने वाले दंपत्तियों के लिए।
- गुरु वशिष्ठ का योगदान – गाय की नई प्रजातियों का विकास, जैसे कामधेनु, कपिला, नंदनी आदि।
- भगवान श्रीकृष्ण का योगदान – गाय पूजा और गौशालाओं की स्थापना की।
- गाय में 33 कोटि देवी-देवता – 12 आदित्य, 8 वसु, 11 रुद्र और 2 अश्विन कुमार का वास।
- आत्मा की अंतिम यात्रा – गाय आत्मा के अंतिम विकास की प्रतीक है।
- गौ-यज्ञ का फल – कत्लखाने से बचाई गई गाय का पालन करने से गौ-यज्ञ का फल मिलता है।
- ऋग्वेद में गाय – गाय को "अघन्या" (वध न करने योग्य) बताया गया है।
- यजुर्वेद और अथर्ववेद – गाय को अनुपमेय और संपत्तियों का घर बताया गया है।

- पौराणिक मान्यता – गाय को साक्षात विष्णु रूप और वेद को गौमय माना गया है।
- महाराजा दिलीप – भगवान राम के पूर्वज नंदिनी गाय की पूजा करते थे।
- गणेश जी का प्रसंग – गणेश जी का सिर कटने के बाद शिवजी को गाय दान करनी पड़ी।
- शिवजी का वाहन नंदी – दक्षिण भारत की आंगोल नस्ल का वृषभ शिवजी का वाहन था।
- जैन तीर्थंकर ऋषभदेव का चिह्न – उनका प्रतीक बैल था।
- गरुड़ पुराण – वैतरणी पार करने के लिए गौदान का महत्त्व बताया गया है।
- श्राद्ध कर्म में गाय का योगदान – पितरों की तृप्ति के लिए गाय के दूध की खीर का प्रयोग।
- गाय का दूध और गोबर – हवन और पूजा के लिए उपयोगी और पवित्र।
- श्रीकृष्ण का ज्ञान – भगवान कृष्ण ने गोचरण से ही अपने ज्ञान की प्राप्ति की।
- गाय और प्रकृति – गाय पर्यावरण को शुद्ध करती है और इसकी उपयोगिता अद्वितीय है।
- अश्विन कुमार और गाय – गाय में अश्विन कुमारों का वास माना गया है।
- गौशालाओं का निर्माण – श्रीकृष्ण और धर्माचार्यों ने गाय की रक्षा के लिए गौशालाएँ बनवाईं।
- गाय को पूजनीय क्यों माना गया – इसे माता स्वरूप मानकर जीवन का आधार माना गया।
- स्कंद पुराण में गाय – 'गौ सर्वदेवमयी और वेद सर्वगौमय' कहा गया है।
- कृष्ण का कथन – श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान कृष्ण ने कहा, "धेनुनामस्मि कामधेनु"
- गाय का आशीर्वाद – गाय की सेवा से मनुष्य को सुख, शांति और समृद्धि प्राप्त होती है।
- गौमूत्र और गोबर से पर्यावरण संरक्षण और स्वच्छता में योगदान।

(3) गौ माता और मूल्यबोध की संरचना :

भारतीय संस्कृति का मूल्यबोध त्याग, सेवा, संतुलन और प्रकृति के साथ सामंजस्य पर आधारित है। गौ माता इन मूल्यों की मूर्त अभिव्यक्ति है। गौ आधारित जीवन शैली-जैसे सादगी, सीमित उपभोग और आत्मनिर्भरता-ने समाज को भौतिकवाद से दूर रखा। गौ दान, गौ सेवा और गोशाला परम्परा ने समाज में कर्तव्यबोध और नैतिक उत्तरदायित्व को सुदृढ़ किया। डॉ.सर्वपल्ली राधाकृष्ण के अनुसार भारतीय दर्शन जीवन को करुणा और संस्कृति के सिद्धांत पर आधारित मानता है, जिसमे गौ माता की अवधारणा पूर्णतः अनुकूल बैठती है ।[4] इस प्रकार गौ माता केवल धार्मिक आस्था नहीं, बल्कि भारतीय मूल्य प्रणाली की आधारशिला है। 22 मई 2026 प्रतापगढ़ में भगवान शिव के अंश पूज्यपाद् शंकराचार्य भगवान स्वामि श्रीअविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती जी महाराज के संबोधन में गौ माता को राष्ट्र माता घोषित किए जाने की माँग को एक बार फिर मजबूती से दोहराया। उन्होंने कहा कि "सनातन धर्म सदैव 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना को लेकर चलता है। गौ माता भारतीय संस्कृति, आस्था और जीवन का केंद्र हैं। जो भी गौ हत्या करेगा, वह हमारा विरोधी है, चाहे वह हमारा अपना ही क्यों न हो।" महाराज जी ने प्रतापगढ़ में मिले जनसमर्थन की सराहना करते हुए कहा कि "मुझे अपने घर प्रतापगढ़ आकर अत्यंत प्रसन्नता हुई। यहाँ अल्पसंख्यक समाज के भी लोग गौ माता को राष्ट्रमाता घोषित किए जाने की माँग का समर्थन कर रहे हैं। यह भारत की एकता, सामाजिक सौहार्द और सांस्कृतिक चेतना का प्रतीक है।"5 हमारे प्राचीन पौराणिक ग्रन्थों में गाय यानी गौ माता को भारतीय संस्कृति का प्रतीक माना गया है। गाय को कपिला, पदमा, गौरी, धेनु, भद्रा, सुरभी, हिन्दुमाता आदि अनेक नामों से जाना जाता है। गाय सदियों से भारतवर्ष में पूजनीय रही है। गौ पालन से ही इस देश के निवासियों का जीवन व्यतीत होता था। इसी कारण गौ वंश संरक्षण ही जीवन का लक्ष्य था। गौ वंश का संवर्धन करना प्रत्येक

भारतीय अपने जीवन का कर्तव्य समझता था। भारतीय संस्कृति के मूल रूप में गौ माता रही है। इसके बिना भारतीय तथा भारतीयता का कोई अर्थ नहीं रह जाता है।

(4) लोकजीवन और सांस्कृतिक परम्पराओं में गौ माता :

भारतीय लोकजीवन में गौ माता का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रहा है। गोपाष्टमी, गोवर्धन पूजा, मकरसंक्रांति जैसे पर्व गौ के प्रति समाज की कृतज्ञता को प्रकट करते हैं। लोककथाओं, लोकगीतों और ग्रामीण परम्पराओं में गौ माता को समृद्धि, शान्ति और करुणा की प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। ये परम्पराएँ सामाजिक एकता को सुदृढ़ करती हैं तथा सांस्कृतिक निरन्तरता बनाए रखती हैं। ऋग्वेद (1/54/6) में इस तरह का वर्णन देखने को मिलता है। गौ भक्त गण, अश्विनी कुमार से प्रार्थना करते हैं कि हे अश्विनी कुमार हम आपके उस गौलोक रूप निवास-स्थान में जाना चाहते हैं। जहाँ सींग वाली, सर्वत्र विचरण करने वाली गौयें निवास करती हैं। वहीं पर सर्वव्यापक विष्णु भगवान का परम पद वैकुण्ठ प्रकाशित हो रहा है। हिन्दू धर्म में गाय को गौमाता कहा गया है। पुराणों में धर्म को भी गाय कहा गया है। भगवान श्रीकृष्ण स्वयं गायों की सेवा किया करते थे। कहा जाता है कि ब्रह्मा जी ने जब सृष्टि की रचना की, तो सर्वप्रथम पृथ्वी पर गौमाता को ही भेजा। सभी पशुओं में गाय ही इस तरह का पशु है कि जिसके मुँह से माँ शब्द का उच्चारण होता है। इसी कारण कहा जाता है कि माँ शब्द की उत्पत्ति गौ माता के ही द्वारा ही हुई है। वाल्मीकि रामायण से लेकर महाभारत, श्रीमद्भागवत महापुराण आदि ग्रन्थों से ज्ञात होता है कि बड़े से बड़े राजा महाराजा लाखों की संख्या में गौ वंश का पालन करते थे। लाखों गायों का एक साथ दान किया करते थे। समाज में बेहतर तथा उत्कृष्ट कार्य करने वाले को गाय दी जाती थी।

भगवान राम ने दस सहस्त्र करोड़ गायें विद्वानों को विधिपूर्वक दान की थी। अयोध्याकांड के 32 सर्ग में प्रसंग आता है कि एक बार भगवान राम के पास त्रिजट नामक ब्राह्मण देवता आए। रामचन्द्र जी ने कहा आप अपनी छड़ी को जितनी दूर तक फेंक सकेंगे, वहाँ तक की सारी गाय आपको मिल जायेगी। ब्राह्मण ने पूरी ताकत के साथ छड़ी को फेंका। छड़ी हजारों गायों के गौष्ट में जाकर गिरी। भगवान श्रीराम ने त्रिजट का सम्मान करते हुये वहाँ तक की सारी गायें उनके आश्रम में पहुँचा दी। गायों की प्राप्ति पर त्रिजट ब्राह्मण ने अपनी गौशाला में जाकर बड़े ही श्रद्धा पूर्वक प्रार्थना करने लगे- हे प्रभो/गायों ने हमारे यहाँ आकर हमारा कल्याण किया है। वे हमारी गौशाला में सुख से बैठे और उसे सुंदर शब्दों से गुंजा दें। ये अनेकों रंग की गायें अनेक प्रकार के बछड़े-बछड़ियों को जने और परमात्मा के यजन के लिए ऊषा काल से पहले दूध देने वाली हों।

(5) गौ माता और ग्रामीण सामाजिक संरचना :

भारतीय ग्रामीण समाज की अर्थव्यवस्था गौ पर आधारित रही है। कृषिकार्य, दुग्ध उत्पादन और जैविक खाद के रूप में गोबर का उपयोग ग्रामीण जीवन को आत्मनिर्भर बनाता रहा है। लोक संस्कृति और सामाजिक परम्पराओं में गौ माता को सांस्कृतिक निरंतरता का प्रतिक माना गया है। गोस्वामी तुलसीदास कृत 'श्रीरामचरितमानस' में रामराज्य के चित्रण में जिस आदर्श सामाजिक व्यवस्था का वर्णन किया गया है, वह भारतीय ग्रामीण जीवन की मूलभूत विशेषताओं को अभिव्यक्त करती है। भारतीय ग्राम्य संस्कृति का आधार कृषि, पशुपालन और विशेष रूप से गौ-संपदा रही है। गौ माता कृषक जीवन के लिए केवल दुग्ध का स्रोत नहीं थी, बल्कि खेती, पोषण, जैविक खाद तथा सामाजिक समृद्धि का भी प्रमुख आधार थी। तुलसीदास जी उत्तरकाण्ड में रामराज्य का वर्णन करते हुए कहते हैं-

"बरनाश्रम निज निज धरम निरत बेद पथ लोग।
चलहिं सदा पावहिं सुखहिं नहिं भय शोक न रोग॥"(
उत्तरकांड दोहा 20)

इस वर्णन से स्पष्ट होता है कि समाज का प्रत्येक वर्ग अपने कर्तव्यों का पालन करता था तथा जीवन में सुख, शान्ति और समृद्धि विद्यमान थी। ऐसी व्यवस्था के मूल में कृषि एवं पशुधन आधारित ग्रामीण अर्थव्यवस्था निहित थी। गौ माता इस ग्रामीण संरचना की प्रमुख धुरी थी, क्योंकि उसके बिना कृषि और ग्राम-जीवन की कल्पना कठिन थी। रामराज्य में प्राकृतिक संतुलन, आर्थिक समृद्धि और

सामाजिक सौहार्द का जो स्वरूप प्रस्तुत किया गया है, वह भारतीय संस्कृति में गौ माता के महत्व को अप्रत्यक्ष रूप से स्थापित करता है। इस प्रकार रामचरितमानस में वर्णित आदर्श समाज गौ-आधारित ग्रामीण जीवन-मूल्यों— सहयोग, आत्मनिर्भरता, करुणा और लोककल्याण-का प्रतिनिधित्व करता है।[6] गौ माता ने ग्रामीण समाज को सामूहिकता, सहयोग और परस्पर निर्भरता की भावना सिखाई । इस दृष्टि से गौ माता सामाजिक संगठन की भी महत्त्वपूर्ण इकाई रही है।

(6) समकालीन समाज में गौ माता की सामाजिक-सांस्कृतिक प्रासंगिकता :

आधुनिक युग में औद्योगीकरण और उपभोक्तावाद के कारण गौ माता की पारम्परिक भूमिका में परिवर्तन आया है। फिर भी पर्यावरण संकट, नैतिक पतन और सामाजिक तनाव के सन्दर्भ में गौ आधारित मूल्यबोध की उपयोगिता और बढ़ गई है। भारतीय ग्रामीण समाज की संरचना कृषि और पशुपालन पर आधारित रही है गौ माता ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भर बनाया और सामाजिक सहयोग की भावना को सुदृढ़ किया ।[7] गौ संरक्षण आज केवल धार्मिक विषय नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक पुनर्निर्माण का प्रश्न बन गया है। समाजशास्त्रीय अध्ययन यह स्पष्ट करते हैं कि गौ आधारित जीवन पद्धति ने सामूहिकता और नैतिक अनुशाशन को बनाए रखा ।

श्रीमद्भागवत में भगवान श्रीकृष्ण की गौ भक्ति, गाय सेवा, गाय दान का बड़ा ही रोचक प्रसंग आता है। योगेश्वर श्रीकृष्ण भगवान प्रतिदिन संध्या तर्पण और गुरु पूजन करने के पश्चात पहले-पहले व्याही हुई दुधारू बछड़ों वाली सीधी शान्त वस्त्रालंकारों से सुसज्जित तेरह हजार चौरासी गायों का दान किया करते थे। इससे सहज ही आकलन किया जा सकता है कि गाय के प्रति कितनी श्रद्धा थी। गाय को कितने संरक्षण के साथ सम्मान प्राप्त था? यह स्वस्थ परम्परा अनादिकाल से ही इस पुण्य भूमि में चली आई है।

महाभारत के विराट पर्व में प्रसंग आता है कि महाराज युधिष्ठिर कितने समर्पित एवं प्रसिद्ध गौ सेवी थे। दुर्योधन ने पाण्डवों के अज्ञात वास के विषय में गंगापुत्र भीष्म से प्रश्न करते हुए कहा कि पितामह पान्डव कहाँ निवास कर रहे होगे? पितामह ने कहा कि इसका बडा सरल सा उत्तर है। जहाँ भी पान्डव रह रहें होगे। वहाँ निश्चित ही गौ वंश की संख्या में वृद्धि हुई होगी। वहाँ धी दूध की किसी तरह से कमी नहीं होगी। महाराज विराट भी गौ पालन तथा गौ संरक्षण के लिए बड़े प्रसिद्ध थे। उनके यहाँ लाखों गायें थी। कौरव इस बात को जानते थे। उन्हें पता चला कि गायें पहले से अधिक हैं। उन्होंने राजा विराट की गायों का हरण कर लिया। गायों की रक्षा के लिए महाराज विराट ने स्वयं युद्ध किया। परन्तु असफल रहे। अन्त में बृहन्नला बनकर विराट की सेवा कर रहे अर्जुन सामने आये और विराट को विजयश्री दिलाई।

शिव मन्दिर में दर्शन करते समय रास्ते में काले रंग की गाय दिखाई देने पर कालसर्प दोष से मुक्ति मिल जाती है। गलत सपना होने पर उसे गाय के कान पर कहने से सपने का कुप्रभाव समाप्त हो जाता है। गाय के खुरों की धूल को माथे पर लगाने से अकाल मृत्यु से रक्षा होती है। गाय की परिक्रमा करने से सम्पूर्ण तीर्थ के माहात्म्य का फल मिल जाता है। गाय का पूजन करने से सम्पूर्ण मनोकामनाएँ पूर्ण हो जाती है। घर में ऐश्वर्य सुख समृद्धि के लिए गाय का होना बहुत ही शुभकारी माना जाता है। यदि किसी की संतान नहीं हो रही है तो गाय को चारा खिलाने से संतान की प्राप्ति हो जाती है। भविष्यपुराण में कहा गया है कि गाय के सींगों में तीनों लोकों के सभी देवता निवास करते हैं। सृष्टि के रचनाकार ब्रह्मा और पालनकर्ता विष्णु गाय के सींगों के निचले हिस्से में विराजमान हैं तो गाय के मध्य भाग में शिव शंकर विराजते हैं। गाय के ललाट में गौरा माँ तथा नासिका के भाग में भगवान कार्तिकेय निवास करते हैं। गाय जहाँ भी बैठती हैं, उसके आसपास के सारे पाप समाप्त हो जाते हैं। कहा जाता है कि गाय अपनी गहरी सांस के द्वारा पापों का क्षय कर देती है। गाय के गौबर (उपलो) से यज्ञ करने पर आस पास का वातावरण शुद्ध हो जाता है। गाय के गौ मुत्र में रोगाणुओं से लड़ने की क्षमता निहित रहती है। इससे अनेक प्रकार की दवाईया बनाई जाती हैं।

(7) निष्कर्ष :

गौ माता भारतीय संस्कृति में सामाजिक चेतना और मूल्यबोध की सशक्त प्रतीक है। उसने समाज को करुणा, अहिंसा, सहअस्तित्व और नैतिक अनुशासन की दिशा प्रदान की है। समकालीन समाज में भी गौ माता से जुड़े मूल्य मानव-जीवन को संतुलित और मानवीय बनाने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। गाय भारतीय संस्कृति में केवल पशु नहीं, बल्कि पूजनीय माता का स्थान रखती है। इसकी सेवा करने से सुख, शान्ति और समृद्धि का आशीर्वाद मिलता है। पौराणिक कथाओं, धार्मिक अनुष्ठानों और आध्यात्मिक महत्त्व ने इसे भारतीय जीवन का अभिन्न हिस्सा बनाया है। इस तरह से शास्त्र सिद्ध करते हैं कि प्राचीन भारत गायों से भरा हुआ था। तब गायों की गिनती कर पाना संभव नहीं था। जन सामान्य तो दूर स्वयं राजा, राजकुमार, दरबारी, गुरु, आचार्य सभी गायों का संरक्षण करनें में अपना सौभाग्य समझते थे। इन तथ्यों से स्पष्ट होता है कि भारत में गाय से बढ़कर किसी अन्य की प्रतिष्ठा नहीं थी।

संदर्भ संकेत :

1. ऋग्वेद, सायण भाष्य सहित, चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी, मण्डल 6, सूक्त 28, पुनर्मुद्रित संस्करण, 2018, पृ. 412
2. अथर्ववेद, हिन्दी अनुवाद, गीताप्रेस, गोरखपुर, काण्ड 10, सूक्त 10, संस्करण 2021, पृ. 623
3. मनुस्मृति, गीताप्रेस, गोरखपुर, अध्याय 5, श्लोक 45–47, पृ. 214
4. राधाकृष्णन, एस. Indian Philosophy, Oxford University Press, Vol. I, First Edition, 1923, Page 87
5. राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक 'तरुणमित्र' वर्तमान पत्र 26/05/2026, https://www.tarunmitra.in/state/uttar-pradesh/mother-cow-is-the-center-of-indian-culture-faith-and/article-143640
6. तुलसीदास, गोस्वामी, श्रीरामचरितमानस, उत्तरकाण्ड, गीता प्रेस, गोरखपुर, 326वाँ पुनःमुद्रण, पृ. 930
7. गुप्ता, के.एल., भारतीय समाज और संस्कृति, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2008, पृ.201